भगवान महावीर और नारी-मुक्ति

पद्मश्री पं. सुमतीबाई शहा

मानव समाज के विकास में स्त्री व पुरुष दोनों को समान स्थान प्राप्त है। स्त्री और पुरुष दोनों होने से एक घटक को अधिक महत्व दिया जाता है तो समाज सर्वांगीण उन्नती नहीं कर सकता। इसलिए समाज की निर्मिती व मानव का विकास और सामाजिक प्रगति के लिए नारी पुरुष के साथ बराबर काम करती रही है।

अन्य किसी भी धर्म की अपेक्षा जैन धर्म में नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसी धर्म ने पुराने मूल्यों को बदल कर उसके स्थान पर परिष्कृत मूल्यों की स्थापना की है। जैन धर्म की दृष्टी से नर और नारी दोनों समान है। भगवान महावीर ने प्रत्येक जीव की स्वतंत्रता स्वीकार की है। इसलिए व्रत धारण करने का जितना अधिकार श्रावक को दिया गया है, उतना ही अधिकार श्राविका का बताया है। जैन शास्त्रों में नारी जाति को गृहस्थ जीवन में धम्मसहाया (धर्म सहायिका) धर्म-सहचारिणी, देव गुरुजनसंकाशा इत्यादि शब्दों में जगह जगह प्रशंसित किया है। नारी को समाज में सम्मानीय और आदरणीय माना गया है।

महिलाओं को सामाजिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में दिए हुए समान अधिकार का बीज जैन धर्म के अत्यन्त प्राचीन काल में ऋषभनाथ तीर्थंकर ने बोया था। उन्होंने गृहस्थावस्था में ब्राम्ही और सुन्दरी इन दोनों कन्याओं को अक्षरविद्या और अध्यात्मविद्या प्रदान की थी। इतना ही नहीं भ. वृषभनाथ से उन दोनों ने आर्यिकाव्रत की दीक्षा ली थी। चतुर्विध संघ के आर्यिका संघ गणिनी (प्रमुख) आर्यिका ब्राम्ही ही थी। दीक्षा ग्रहण करने का अधिकार स्त्रियों को उस काल में प्राप्त होना यह आध्यात्मिक जगत में क्रान्ति ही थी। यह परम्परा आज भी अक्षुण्ण रूप में चली आ रही है।

राजा अग्रसेन की कन्या राजुलमती नेमिनाथ के दीक्षा ग्रहण करते ही अर्यिका की दीक्षा ग्रहण कर आत्मकल्याण की और अग्रसर हुई। वैशाली के चेटक राजा की कन्या चन्द्रासनी ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर भगवान महावीर से दीक्षा ली। सती चन्दनवाला ने वैवाहिक बंधन में न बंधकर भगवान महावीर से आर्यिका की दीक्षा ली और साध्वियों की प्रमुख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बनीं। इस प्रकार जब अन्य धर्म मनीषियों ने स्त्रीयों को पुरुषों का अनुवर्ति माना उस समय भगवान महावीर ने स्त्रियों की स्वतंत्रता और उनके समान अधिकार की घोषणा की। आज भी भारत में हजारों साध्वियाँ आर्यिका का कठिन व्रत धारण कर आत्मकल्याण के साथ-साथ महिलाओं में आत्मिक जागृती का कार्य कर रही है।

सामाजिक कार्य और जैन नारी :—जैन शास्त्रों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महावीर के समय में और उसके पूर्व महिलाओं को आजन्म अविवाहित रहकर समाजसेवा और आत्मकल्याण करने की अनुज्ञा थी। आदिपुराण पर्व 18 श्लोक 76 के अनुसार इस काल में पुरुषों के साथ ही कन्याओं पर भी विविध संस्कार किये जाते थे। राज्य परिवार से संबंधित महिलाओं को विशेषाधिकार प्राप्त थे। कन्या पिता की संपत्ति में से दान भी कर सकती थी। उदाहरण के लिए सुलोचना ने अपनी कौमार्यावस्था में रत्नमयी जिन प्रतिमा की निर्मिती की थी और उन प्रतिमाओं को प्रतिष्ठा करने के लिए बड़े ढंग से पूंजीभिषेक विधि का भी आयोजन किया था।

कुछ जैन महिलाएँ राज्य व्यवहार में पूर्ण निपुण थी साथ में उन्होंने राज्य की रक्षा के लिए युद्ध में प्रत्यक्ष भाग लिया था। इसके लिए अनेक ऐतिहासिक उदाहरण दिए जा सकते है। पंजिरि देश के प्रसिद्ध सविध राजा की कन्या अर्धांगिनी ने खारवेल राजा के विरुद्ध किये गये आक्रमण में उसे सहयोग दिया था। इतना ही नहीं उसने इस युद्ध के लिए महिलाओं की स्वतंत्र सेना भी खड़ी की थी। युद्ध में राजा खारवेल के विजय पाने पर खारवेल राजा के साथ उसका विवाह हुआ था। गंग घराने के सरदार नाम की लड़की और राजा विखर लोक विद्याधर की पत्नी सामिमबने युद्ध की सभी कलाओं में पारंगत थी। सामिमबने के मर्मस्थल पर बाण लगने से उसे मूर्च्छा आ गई और भगवान् जिनेन्द्र का नाम स्मरण करते उसने इहलोक की यात्रा समाप्त की।

विजय नगर की सरदार चंपा की कन्या रानी भैरवदेवी ने राज्य नष्ट होने के बाद अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया था और वहाँ मातृसत्ताक पद्धति से कई बरसों तक राज्य चलाया था। नालजकोंड देशके अधिकारी नागार्जन की मृत्यु के बाद कदंबराज ने उनकी देवी वीरांगना जक्कमव के कंधो पर राज्यकार्य भार की जिम्मेदारी रखी। आलेशो में इसे 'युद्ध-शक्ति मुक्ता और 'जिनेंद्र शासन भक्ता' कहा गया है। अपने अंत काल तक उसने राज्य कार्य भार की जिम्मेदारी संभाली।

गंग राजवंश की अनेक नारियों ने राज्यकार्य भार की जिम्मेदारी संभालकर अनेक जिन मंदिर व तालाब बनाए। चम्पला रानी का नाम जिन मंदिर निर्मिती और जैन धर्म की प्रभावना के लिए अधिक प्रसिद्ध है। उसी प्रकार श्रवण बेल गोल शिला लेख क्र. 496 से पता चलता है कि णिक्कमब्बे शुभचन्द्र देव की शिष्या थी। योग्यता और कुशलता से राज्यकार्यभार करने के साथ ही धर्म प्रचार के लिए इन्होंने अनेक जैन प्रतिमाओं की स्थापना की थी।

जैन नारियों के द्वारा शिल्प व मंदिरों का निर्माण किया गया। इसका उल्लेख शिलालेखों में मिलता है। कलिंगपति राजा खारवेल की रानी ने कुमारी पर्वत पर जैन गुफाओं का निर्माण किया था। सोरे की राजा की पत्नी ने अपने पति का रोग हटाने के लिए एक मंदिर व तालाब का निर्माण किया था। यह मंदिर आज भी 'मुक्तकनेरे' नाम से प्रसिद्ध है। आहवमल्ल की राजा के सेनापति मल्लम की कन्या 'अंतिमब्बे' दानशूर व जैन धर्म पर श्रद्धा रखने वाली थी। उसने चाँदी और सोने की अनेक जैन प्रतिमाओं का निर्माण कराया था। उसने लाखों रुपयों का दान दिया था। उसे अनेक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रथों में 'दानचिंतामणी' पदवी से विभूषित किया गया है। विष्णुवर्धन राजा की रानी शांतल देवी ने सन् 1123 में श्रवणबेलगोल में भगवान जिनेन्द्र की विशालकाय प्रतिमा स्थापित की थी। सन् 1131 में सल्लेखना व्रत का पालन कर शरीर-त्याग किया था।

साहित्य क्षेत्र में कार्य :—अनेक जैन नारियों ने लेखिका और कवियित्री के रूप में साहित्य जगत में प्रसिद्धि प्राप्त की है। सन 1566 में कवियित्री 'रणमति' ने 'यशोधर काव्य' नामका काव्य लिखा। आर्यिका रत्नमती की 'समकितरास' यह हिन्दी-गुजराती मिश्रित काव्य-रचना उपलब्ध है। महाकवियित्री रत्न ने अपनी अमरकृति अजितनाथ पुराण की रचना दान चिंतामणी अतिमब्बे के सहकार्य से ही ई. स. 993 में पूर्ण की थी। श्वेताम्बर साहित्य में चारदत्त-चरित्र लिखने वाली पद्मश्री, कनकावती-आख्यान लिखनेवाली हेमश्री महिलाएँ प्रसिद्ध है। अनुलक्ष्मी, अवन्ती, सुन्दरी, माधवी आदि विदुषियाँ प्राकृत भाषा में लिखने वाली प्रसिद्ध कवियित्रीयाँ है। उनकी रचनाएँ प्रेम, संगीत, आनंद, व्यथा, आशा-निराशा। जिनेन्द्र भक्ति आदि गुणों से युक्त है।

इसके अलावा नृत्य, गायन, चित्रकला, शिल्पकला आदि क्षेत्रों में जैन महिलाओं ने असामान्य प्रगति की है। प्राचीन ऐतिहासिक काल में जैन नारी ने जीवन के सभी क्षेत्रों में अपना सहयोग दिया है। समाज उसे सम्मान की दृष्टी से देखता था। समाज ने नारी को उसकी प्रगति के लिए सब सुविधाएँ दीं थी। गृहस्थ धर्म पालन करते हुए उसकी प्रगति अपने पुत्र-पुत्रियों को सुसंस्कारित करना, राजकार्य, समाजकार्य, धार्मिक कार्य में सक्रिय सहयोग देना वह अपना कर्त्तव्य समझती थीं।

इस प्रकार भगवान महावीर या उनके पूर्व की सामाजिक परिस्थिति यदि देखी जाएँ तो उस प्रतिकूल परिस्थिती में जैन नारियों ने जो महत्वपूर्ण कार्य किए उनका मूल्य बढ़ जाता है। उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति करने के अवसर प्राप्त होना यह भगवान महावीर के द्वारा स्त्री मुक्ति की घोषणा के कारण ही संभव हो सका, यदि ऐसा कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिस युग में स्त्रियाँ वेद या धार्मिक साध्वी वेश धारण करके मुक्ति-मार्ग पर नहीं चल सकती थी। उसे सामान्य क्रान्ति ही कही जा सकती है। स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त करने के लिए सैकड़ों वर्ष स्त्रियों को संघर्ष करना पड़ा है। परन्तु जैन धर्म के मनीषियों ने बहुत पहले ही स्त्री-स्वातंत्र्य की घोषणा कर दी थी। यह जैन धर्म का स्त्री-पुरुष को अलग न मानने का दृष्टिकोण अर्थात् दोनों को प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने के अवसर प्रदान करना विशेष उल्लेखनीय कहा जा सकता है।

इस प्रकार प्राचीन काल में जैन महिलाएँ प्रत्येक क्षेत्र में अग्रसर थी। परन्तु मध्ययुग में विदेशी आक्रमणों के कारण स्त्रियों को सुरक्षित रखने के नाम पर समाज ने स्त्रियों पर अनेक बन्धन लगाए। इसका प्रभाव जैन महिलाओं पर भी पड़ा। परन्तु भगवान महावीर की स्त्री-मुक्ति की घोषणा के कारण ऐसी परिस्थितियों में भी अनेक जैन महिलाओं ने कार्य किए है। इसका उल्लेख ऊपर आ चुका है। फिर भी उनकी स्वतन्त्रता और स्वविकास में बाधा अवश्य आई। इसी कारण शिक्षा, धर्म-संस्कार तत्वज्ञान आदि में नारी बहुत पीछे रही। एक बार लगे हुए बन्धन आजादी मिलने पर भी टूट न सके।

आज फिर से सारे जगत में नारी जागृति की लहर आई है। महिला-वर्ष का आयोजन इसी जागृतिका परिचायक है। इसका प्रभाव जैन महिलाओं पर भी पड़ा है। इस वैज्ञानिक युग में जैन महिलाओं ने अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। भारतीय ज्ञानपीठ के माध्यम से श्रीमती रमा जैन ने साहित्य और धार्मिक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्षेत्र में जो कार्य किए हैं उन्हें कौन भुला सकता है। श्रीमती कंकुबाई के दातृत्व और नेतृत्व के कारण अनेक शैक्षणिक संस्थाएँ और अस्पताल आज समाज की सेवा कर रहे हैं। श्रीमती कस्तूरबाई के द्वारा स्थापित कस्तूरबाई ट्रस्ट के द्वारा आज अनेक संस्थाऐं कार्यरत है। सोलापुर में क्षु. राजुलमतीबाई द्वारा स्थापित 'श्राविका संस्था नगर' आज शैक्षणिक धार्मिक ब सामाजिक कार्य में अग्रसर है। चन्दाबाई के द्वारा जैन बालाश्रम आरा की स्थापना जैन महिलादर्श का संपादन, अखिल भारतीय महिला परिषद की स्थापना आदि महत्वपूर्ण कार्य किये गए है।

साहित्य निर्माण में भी अनेक जैन महिलाएँ आज महत्वपूर्ण स्थान बना रही है। उदाहरण के लिए साध्वी चन्दनादर्शनाचार्य के द्वारा अनेक ग्रंथों का लेखन और संपादन किया गया है। सौ. सुरेखा शहा के उपन्यास प्रसिद्ध मासिकों में प्रकाशित हो रहे है। श्रीमती कलंत्रेअक्का, श्रीमती लेखवती जैन (हरियाणा विधान सभा अध्यक्षा) सौ. लीलावती मर्चन्ट, श्रीमती इंदुमती सेठ, श्रीमती ओमप्रकाश जैन आदि महिलाएँ राजनैतिक क्षेत्र में अग्रसर रही है। इतना ही नहीं औद्योगिक क्षेत्र में भी वे कार्य कर रही है।

संक्षिप्त में भगवान महावीर ने ढाई हजार वर्ष पहले जो नारी में मुक्ति की घोषणा की थी, वह आज फिर से नारी-समाज में गुंजित हो रही है। हमें उस स्वर को सुनने की आवश्यकता है। अभी भी अशिक्षा, अंधविश्वास, दहेज आदि कुप्रथाएँ नारी-विकास के मार्ग में रुकावटें हैं इन्हें हटाना हमारा कर्त्तव्य है। उसी प्रकार नारी को भी अपने अतीत के खोए हुए गौरव और अधिकार को पाने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। नारी-जागरण के लिए हर सुशिक्षित क्रान्तिकारी व प्रगतिशील विचार की नारी को आगे आना चाहिए। नारीयों ने अधिकारों की माँग तो करनी ही चाहिए परन्तु पाश्चात्य जगत् के प्रभाव से फैशन आदि के रूप में जो नई कुरीतीयाँ स्त्रियों में आ रही हैं उन्हें रोकना भी जरूरी है। नारी-क्रान्ति का अर्थ केवल बाह्य वेश-भूषा या उच्छृंखल विचारों की क्रान्ति नहीं है। प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के शब्दों में 'महिला-मुक्ति' भारत के लिए मौज की वस्तु नहीं है। बल्कि एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। ताकि, राष्ट्र भौतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक दृष्टि से अधिक संतोषजनक जीवन की ओर अग्रसर हो सके।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org